

## अहम् परिवार में कैसे रहें ?

आचार्य महाप्रमण

अहिंसा का एक सार्वलौकिक उद्बोध है - भिन्नी में सब बुरसु - सब प्राणियों के साथ मैत्री करें। एक-दो व्यक्तियों के साथ ही नहीं, प्राणी मात्र के साथ मैत्री का प्रयोग करें। औसों के साथ मैत्री करना फिर भी संभव हो सकता है परन्तु जो आस-पास रहते हैं, साथ रहते हैं; उनके साथ समुचित व्यवहार रहे, इस पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। परिवार में कैसे रहें ? पहली बात है - परिवार में रहने के लिए दुराग्रह से बचना चाहिए। व्यक्ति को अनाग्रही होना चाहिए। मेरा इस बारे में यह विचार है कि 'कहीं' आग्रह किया जा सकता है। परन्तु सब जगह आग्रह नहीं करना चाहिए। व्यवहार की छोटी-मोटी बातों के लिए दुराग्रह नहीं करना चाहिए। सत्य का अनुसंधान करना है तो आदमी को अनाग्रही होना होगा। संस्कृत साहित्य में कहा गया -

कवि ने सुंदर कहा - एक आग्रही आदमी होता है और एक अनाग्रही आदमी होता है। जो दुराग्रही आग्रही होगा वह युक्ति को भी जैसे-तैसे अपने मत में फिट करने का प्रयास करेगा। अनाग्रही व्यक्ति यह प्रयास करेगा कि जो युक्तिसंगत बात है मैं इसे स्वीकार करूँ। आग्रह में स्थिति होती है। उदाहरण के लिए दो आदमी रस्सी के एक किनारे को स्थिति हैं। अगर रस्सी कमजोर है और उसे दोनों खींचेंगे तो रस्सी टूट जायेगी और दोनों गिर जायेंगे। अगर दोनों में से एक ढील छोड़े तो जिसने ढील छोड़ी वह खड़ा रह जायेगा और जो खींचेगा वह गिर जायेगा। अगर दोनों ही ढील छोड़ें तो दोनों ही खड़े रह जायेंगे। इसी प्रकार परिवार में भी कुछ छोटी-मोटी बातों को लेकर या कुछ बड़ी बातों को लेकर भी आग्रह - विग्रह हो सकता है। जब संपत्ति का बंटवार होता है तो कई जगह पहले आग्रह होता है फिर विग्रह की संभावना बनती है। संग्रह, आग्रह और विग्रह। संग्रह (संपत्ति) तो घर में होता है। उसमें आग्रह हो जाता है कि मुझे इतना मिले। फिर विग्रह होता है। विग्रह का कारण है - आग्रह। संग्रह भी निमित्त कारण बन सकता है। संग्रह को छोड़ना संभव नहीं है और न ही आवश्यक है। आग्रह को छोड़ना चाहिए। जिन दो भाइयों में प्रेम होता है उसे राम - लक्ष्मण की जोड़ी की उपमा दी जाती है, परन्तु पती जोड़ी कभी राम - रावण की बन जाती है। भाई में ही नहीं बाप-बेटे में भी

अनबन हो जाती है। दाम्पत्य जीवन में भी समस्या पैदा हो जाती है। परिवार में तलाक संबंधी स्थिति बन जाती है और पति-पत्नी में वैमनस्य हो जाता है। एक दूसरे को सहन न करने की स्थिति वैमनस्य पैदा कर सकती है। वैचारिक मतभेद भी वैमनस्य का कारण हो सकता है। दाम्पत्य जीवन सानन्द रहे, उसमें कहीं वैमनस्य बिखराव न आए, तनाव पैदा न हो इसके लिए उन कारणों से बचना अपेक्षित है। लंबे काल तक तनावमुक्त दाम्पत्य जीवन जीना एक प्रकार की साध्यता है। आंति तब बनी रह सकती है जब एक दूसरे के प्रति हितैषिता हो। जहां अपना स्वार्थ हावी हो जाए वहां परहित की बात गौण हो जाती है। आदमी को कहीं अपना स्वार्थ छोड़ना चाहिए। अगर परिवार में हितैषिता की भावना हो तो पारिवारिक जीवन में सामंजस्य रह सकता है।

पारिवारिक जीवन में कठिनाई पैदा करने वाला एक कारक तत्व है - नशे की प्रवृत्ति। पुरुष नशा करता है तो परिवार के लिए समस्या पैदा हो जाती है। कभी नशे में वह पत्नी, बच्चों की पिटाई भी कर देता है। परिवार की आर्थिक स्थिति के सामने भी प्रबल खड़ा हो जाता है। नशा जहां आर्थिक कठिनाई का कारण है वहां पारिवारिक वैमनस्य का भी कारण है। और आर्थिक, मानसिक स्वास्थ्य में भी बाधा है। परिवार की ऐसी आचार-संहिता हो कि हमारे परिवार में कोई भी नशा नहीं करेगा। सब नशामुक्त जीवन जीएंगे तो परिवार के सुखी रहने का एक सहायक तत्व हस्तगत हो सकता है।

मैंने यात्राओं में अनुभव किया कि नशे के कारण किस प्रकार परिवार समस्याग्रस्त बन जाता है। कहीं तो महिलाएं भी नशा करती हैं। एक दम्पति के लिए मुझे बताया गया कि दोनों पति-पत्नी नशा करते हैं। हम लोगों को नशा न करने की प्रेरणा देते हैं। प्रेरणा देने से अंतर भी आता है और अनेक लोग नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार कर लेते हैं। नशा न हो तो पारिवारिक जीवन में सुख और आंति का संचार हो सकता है। परिवार में अच्छे संस्कार रहें और साधन-सामग्री ठीक रहे तो परिवार स्वर्ग बन जाता है। धार्मिक मन्त्रव्यों के अनुसार स्वर्ग और नरक का अलग-अलग स्थान है। मुख्यतया स्वर्ग ऊपर होता है और नरक नीचे होता है। नरक दुःख का प्रतीक है और स्वर्ग सुख का प्रतीक है।

परिवार में अभाव नहीं है। अभाव भी समस्या का एक कारण है। अगर परिवार में भोजन की, वस्त्र की और आवास की व्यवस्था नहीं है तो परिवार के दुखी होने का कारण बन सकता है। अभाव से स्वभाव भी बिगड़ सकता है। जहां अच्छे संस्कार हैं, समुचित मात्रा में संपत्ति है और प्रेम का पाशवाह है वह परिवार स्वर्गतुल्य परिवार बन सकता है। हम धरती के स्वर्ग को न भूलें। परिवार स्वर्ग बना रहे उस दिशा में हमारा पुरुषार्थ चलता रहे। एक चोर पकड़ा गया। उसके अपराध के लिए उसे फांसी की सजा सुनाई गई। फांसी का समय निकट आ गया। उससे अंतिम इच्छा पूछी गई। उसने अपनी मां से मिलने की इच्छा प्रकट की। मां को बुलाया गया। मां रोती हुई आई। लड़का आगे बढ़ा और मां का नाक चूसा गया। अधिकारी बोले - धिक्कार है तुम्हें। ऐसी अवस्था में भी तुम मां के साथ अभद्र व्यवहार करते हो। लड़का बोला - आज मुझे जो फांसी दी जा रही है वह मेरी मां का प्रताप है। मां ने मुझे अच्छे संस्कार नहीं दिए। मैं 5-6 वर्ष का छोटा बच्चा था। एक दिन मैंने स्कूल में किसी लड़के की पेंसिल चुरा ली। घर आकर जब वह मां को दिखाई तो मां ने बाबासी ही और मेरा डाँसाह बढ़ाया। मां मेरी पीठ धपधपाती रहीं और इस तरह मैं नाभी चोर बन गया। अगर मेरी मां मुझे उसी समय रोक देती तो संभवतः मैं ऐसा काम नहीं करता। मां ने मुझे प्रोत्साहन दिया जिसके कारण आज मुझे फांसी की सजा देने जा रही है।

परिवार में अच्छे संस्कार भरने के लिए "कभी" महिलाओं को कड़ाई भी करनी चाहिए। वात्सल्य और नम्रता ठीक है परन्तु कड़ाई से भी काम होता है। पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी मनोवैज्ञानिक तरीके से बाल संतों को संस्कार देने का प्रयास करते हैं। परिवार में कही आग्रह नहीं होना चाहिए। कौन सी शैली काम में ली जाए इसका भी ज्ञान होना चाहिए। क्योंकि एक ही शैली सबके काम नहीं आ सकती। यह ज्ञान जिस मुखिया के पास होता है वह अपने परिवार को विकास की दिशा में आगे बढ़ा सकता है। इन बातों को ध्यान में रखें तो परिवार सानन्द रह सकेगा।

परिवार में अनाग्रह की वृत्ति रहे, हितैषिता की भावना

रहे, अच्छे संस्कार रहे, दाम्पत्य जीवन में वैमनस्य पैदा करने वाली स्थितियों का निराकरण करने का प्रयास हो और परिवार में साधन-सामग्री का अभाव भी न हो तो वह परिवार सुखी रह सकता है। इस प्रकार परिवार में रहा जाए तो 'परिवार में कैसे रहे' इसका उत्तर अपने आप आ जाता है। ऐसा परिवार एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत हो सकता है।